सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास

b. भाषायी कौशलों का महत्व

c. भाषा के कौशल

d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग

f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल

g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल

b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर

c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर

d. वाचन शिक्षण की विधियाँ

e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें

f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल

b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता

c. लेखन कौशल का महत्व

d. लेखन शिक्षण का समय

e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा

f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ

g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

भाषायी कौशलों का महत्व

भाषा शिक्षण में भाषायी कौशलों का विशेष महत्व है। भाषा शिक्षण का अर्थ भाषा में विषयों में शिक्षण नहीं बल्कि भाषायी कौशलों का शिक्षण है। इसका यह अर्थ हुआ कि भाषाओं को अभ्यास के

Scanned with CamScanner

द्वारा सीखा जाता है या भाषा की आदत उत्पन्न की जाती है। मातृ भाषा के मुख्य कौशलों को तो बालक परिवार में ही सहजता और स्वाभाविकता से सीख लेता है, लेकिन अन्य भाषाओं को सीखते समय इन चारों कौशलों को सीखना अति आवश्यक हो जाता है। ये कौशल ही भाषा-व्यवहार के आधार हैं। अन्य भाषा में विचारों के आदान-प्रदान, उपलब्ध साहित्य तथा विविध प्रकार का ज्ञान तथा सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराने के लिए भाषा के उच्चरित और लिखित रूप का अभ्यास कराना आवश्यक है। वास्तव में इन कौशलों के माध्यम से ही सम्प्रेषण स्थापित किया जाता है। अतः भाषा शिक्षण में इन कौशलों का महत्व स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner